

कालिदास कृत मेघदूतः एक विवेचना

Seema Punia, MA (Sanskrit literature), Mphil (Sanskrit), seemapunia2011@gmail.com

सार

संस्कृत भाषा ही आर्यों की मातृ-भाषा थी। कहते हैं—उस समय संस्कृत भाषा को ही लोक-व्यहार के प्रयोग में लाया जाता था। इसलिए संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वानों की भी कमी नहीं थी। कुछ विद्वान वीणा पाणि मां सरस्वती के कृपा-पात्र भी थे, उनमें से एक कवि कालिदास का नाम भी आता है। संचार के साधनों में पशु-पक्षी भी आते थे। इसलिए विरही यक्ष का संदेश-वाहक कवि ने मेघ (बादल) को बनाया जिसमें विरह-व्यथा के मार्मिक वर्णन का प्राकृतिक चित्रण भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

ISSN 2454-308X



9 770024 543081

तारक नामक असुर का वध भगवान शंकर के अंश द्वारा ही सम्भव था। इसलिए परम विरक्त शिवजी को वैवाहिक बंधन में बंधने हेतु कामदेव को भेजना, शिव-कोप से कामदेव का भस्म होना, पार्वतीजी के अखंड तप से शिव का प्रसन्न होना, पार्वती-विवाह और काम का पुनर्जीवित होना, शिव का दाम्पत्य सुख-भोग और सुकुमार (स्वामी कार्तिकेय) की उत्पत्ति, सेनापतित्व में तारक असुर का वध आदि का वर्णन 'कुमार संभवम्' काव्य में बहुत ही सरस एवं अलंकृत भाषा में किया गया है।

*मत्वा देवं धनपतिसखं यत्र साक्षाद्वसन्तं
प्रायश्चापं न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम्।
सभ्रुभङ्गप्रहितनयनैः कामिलक्ष्येष्वमोघै-
स्तस्यारम्भश्चतुरवनिताविभ्रमैरेव सिद्धः ॥*

मुख्य शब्दः संस्कृत, मेघ, प्राकृतिक, वैवाहिक इत्यादि।

प्रस्तावना

किसी ग्रन्थ की महत्ता और उपादेयता उसकी लोकप्रियता पर निर्भर करती है। विद्वान और अविद्वान दोनों को ही ग्रन्थ समान रूप से प्रिय होते हैं। वे ही ग्रन्थ प्रशंसनीय होते हैं और उन्हीं की महत्ता तथा उपादेयता भी स्वतः सिद्ध है।

संस्कृत साहित्य और कालिदास का सम्बन्ध अटूट है। संस्कृत साहित्य का सारा सौष्ठव बहुत कुछ इन ग्रन्थों पर निर्भर है। यदि संस्कृत साहित्य से कालिदास को हटा दिया जाये तो उसमें अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के रहते हुए भी संस्कृत साहित्य की लोकप्रियता में कमी आ जाएगी।

कालिदास अथवा उनकी कृतियों के प्रशंसक भारत ही में नहीं अपितु विश्व-भर में पाये जाते हैं। अमेरिकी विद्वान राइडर ने उनकी श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए अन्त में यही कहा था, 'कालिदास महान् साहित्यकार थे।' जर्मन कवि गेटे ने तो उनकी प्रशंसा में बहुत कुछ कह डाला था और कालिदास की अनन्य कृति 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' को पढ़कर उनके मुखे से बरबस निकल पड़ा था 'यदि तुम स्वर्ग और मृत्युलोक को एक ही स्थान पर देखना चाहते हो तो मेरे मुख से सहसा एक ही नाम निकल पड़ता है—

'शाकुन्तलम्'।

कालिदास का 'मेघदूत' यद्यपि छोटा-सा काव्य-ग्रन्थ है किन्तु इसके माध्यम से प्रेमी के विरह का जो वर्णन उन्होंने किया है उसका उदाहरण अन्यत्र मिलना असंभव है। आषाढ और श्रावण का प्रेम